शिक्षकों को आपस में
अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

माह
जून, 2023

चर्चा पत्र

नवम वर्ष
अंक - 01

किसी भी कक्षा के भीतर की तुलना में
कक्षा के बाहर चौराहों से भी
बहुत कुछ सीखा जा सकता है

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: समय के साथ बदलें, नए सत्र में कुछ नया सोचें !

भुतहा सी नज़र होने वाली यह बंद फैक्ट्री है रानीबाग उत्तराखण्ड में एचएमटी की. किसी समय यह भारत का वक्त बताती थी. भारत की इकमात्र घड़ी कंपनी थी, भारत सरकार का उपक्रम थी. कभी इसकी घड़ी लेने के लिए सालों की वेटिंग होती थी.

इस कंपनी के पास भारत के सर्वश्रेष्ठ डिज़ायनर थे, इंजीनियर थे. बस नहीं थी तो इच्छा शक्ति समय के साथ चलने की, ग्राहकों को भगवान मानने की. सारी दुनिया क्वाट्र्ज़ टेक्नोलॉजी में आ चुकी थी लेकिन एचएमटी की ज़िद थी कि वह मैन्युअल चाभी भरने वाली घड़ियाँ ही बनायेंगे. उसमे भी डिमांड सप्लाई का गैप इतना कि ग्राहकों को सालों इंतज़ार करना पड़ता था, रिश्वत देनी पड़ती थी.

कंपनी का मैनेजमेंट सब तरह से कमाता था. ग्राहकों से ब्लैक में पैसा ले कर. पॉवर फुल लोगों को समय से घड़ी देकर एहसान कर और सबसे ज्यादा क्वाट्र्ज़ की इलेक्ट्रॉनिक घड़ियाँ न बना कर अवैध रूप से विदेशी कंपनियों को मार्केट का हिस्सा देकर. एक समय भारत में बिकने वाली अस्सी प्रतिशत घड़ियाँ अवैध रूप से भारत आती थीं. मज़ेदार बात थी कि उन घड़ियों के विज्ञापन आदि भी होते थे, फुल ऑफिस थे, बस वैध तरीक़े से भारत में बिक नहीं सकती थीं. ग्राहक भी वही ख़रीदते, दुकानदार भी वही बेचते, बस भारत सरकार का भ्रम था कि भारत में हम केवल एचएमटी की घड़ी ही बिकने देंगे.

फिर एंट्री हुई टाटा की. टाइटन कंपनी आई. उन्होंने तय किया कि वह केवल इलेक्ट्रॉनिक घड़ी बनायेंगे. एचएमटी के पास उनसे मुक़ाबले की रण नीति यह कि हम सरकारी हैं सरकार से बोल किसी प्राइवेट कंपनी को न आने देंगे. पर टाटा भी इतने हल्के न थे. टाइटन ने एचएमटी से ही रिटायर्ड अधिकारी, इंजीनियर लिए. और पचास साल पुरानी कंपनी एचएमटी ने केवल एक साल के अंदर अपनी बादशाहत खो दी और टाइटन नंबर एक कंपनी हो गई. बस तीन सालों के अंदर एचएमटी की घड़ी भारत में कोई मुफ़्त ख़रीदने वाला न बचा.

आज यह फैक्ट्री अपने गुजरे कल के इतिहास की गवाह है. गवाह है कि जो व्यवसाय के साथ नहीं चलता है, ग्राहकों का सम्मान नहीं करता है एक दिन वह मिट्टी में मिल ही जाता है. भले ही कभी उसकी मोनोपोली रही हो, एकछत्र साम्राज्य रहा हो.

आपस में चर्चा करें एवं स्वयं भी सोचें कि आप आने वाले सत्र में अपने इस पवित्र और नेक व्यवसाय में अपने आपको बेहतर तरीके से स्थापित करने, बच्चों के सीखने को बेहतर करने की दिशा में क्या-क्या बदलाव लाना चाहेंगे ? इस सत्र के लिए आपस में बैठकर कुछ ठोस योजना शुरू में ही बना लेवें! ध्यान रखें कि बदलाव के दौर में जो अपने आपको अपग्रेड नहीं करेंगे वे एचएमटी घड़ी की तरह गायब हो जाएंगे ! रचनात्मक बदलाव का हिस्सा बनें ! आइये हम सब मिलकर छत्तीसगढ़ की शिक्षा में आमूल-चूल बदलाव लाने की ओर आगे बढ़ें !

एजेंडा दो: आने वाले सत्र में नया क्या कुछ करना चाहेंगे

सरकारी स्कूलों को असरकारी बनाने हेतु हम सबको मिलकर अपने कार्यसंस्कृति में अमूल-चूल परिवर्तन कर बदलाव लाते हुए बेहतर परिणाम देने होंगे. हम इन छोटे-छोटे बदलावों को सभी शालाओं में संकुलों के माध्यम से सुनिश्चित कर सकते हैं-

1. प्रत्येक शाला में उसके फीडर शाला एवं पिछली कक्षा के सभी बच्चों को अगली कक्षा में प्रवेश लेने की स्थिति एवं बच्चों से शाला जाने योग्य सभी बच्चे एवं शाला त्यागी, अप्रवेशी बच्चों की पहचान कर सभी शाला अप्रवेशी बच्चों को इस सत्र में प्रत्येक बच्चे की ट्रेकिंग करते हुए उनका नियमित प्रवेश एवं सीखना सुनिश्चित करवाएं (OOSC)
2. कक्षा 1 से 3 तक आपको उपलब्ध करवाए गए होलिस्टिक रिपोर्ट के आधार पर उन कक्षाओं के लिए निर्धारित सभी लर्निंग आउटकम को अगली कक्षा में प्रवेश लेने के पूर्व अच्छे से हासिल किया जाना सुनिश्चित करें ताकि शिक्षकों को कक्षा अनुरूप दक्षताओं पर पूरे सत्र में कार्य करने का अवसर मिल सके (Teaching at Right Level TaRL)
3. शाला परिसर में प्रिंट-रिच वातावरण (Print-rich environment) एवं शाला की बाहरी दीवार पर सभी कार्यरत शिक्षकों के फोटोग्राफ एवं उनका विवरण
4. प्रत्येक प्राथमिक शाला के कक्षा 1 के बच्चों के साथ 90 दिनों का शाला हेतु तैयारी कार्यक्रम (school Readiness) के माध्यम से बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना
5. प्रत्येक बच्चे को अभ्यास पुस्तिकाएं देते हुए उन पर नियमित अभ्यास (practice with workbooks and feedback for improvement)कर उनके कार्यों में सुधार हेतु नियमित फीडबैक देने की व्यवस्था
6. विद्यार्थियों को एक दूसरे से सीखने हेतु (Peer Learning) प्रत्येक विद्यार्थी को छोटे-छोटे समूहों में एक दूसरे के साथ मिलकर सीखने-सिखाने का नियमित अनुभव
7. बच्चों को प्रदत्त पाठ्यपुस्तकों में कव्हर डलवाएं ताकि उन्हें सुरक्षित रखा जा सके
8. प्रारंभ से ही बच्चों के पठन कौशल विकास पर फोकस करते हुए उनकी समझ के साथ पढने की गति में सुधार पर विशेष ध्यान देवें. प्रत्येक बच्चे को कक्षा तीन तक पढने के कौशल के विकास एवं उसके बाद समझ एवं गति के साथ पढने में निरंतर सुधार लाने की दिशा में प्रत्येक बच्चे पर ध्यान देते हुए आगे बढ़ें (Learn to Read and then Read to Learn)
9. कक्षा शिक्षण में नवीन प्रविधियों का अधिकाधिक उपयोग करते हुए बच्चों के बेहतर सीखने की दिशा में काम करना जारी रखें, खिलौनों से सीखना, स्थानीय भाषा में सीखने में सहयोग करना, खेल-खेल में सीखना, अनुभवों से सीखना, बड़े एवं छोटे समूह बनाकर एक दूसरे से सीखना, समुदाय से सीखने में सहयोग लेने जैसे रणनीतियों का पूरी कडाई से अपनी अपनी कक्षाओं में पालन करवाएं. (innovative pedagogy)
10. आकलन को प्रभावी बनाने हेतु सीखने का आकलन के बदले में सीखने के लिए आकलन (assessment for learning & not assessment of learning) को उपयोग में लाएं.

आगामी सत्र में उपरोक्त बातों को सभी शिक्षक अपनाते हुए एक व्यापक बदलाव की ओर अग्रसर होते हुए बदलाव के वाहक बनने संबंधी क्रान्ति में सक्रिय भूमिका निभाएं.

एजेंडा तीन: क्या आप वह अदृश्य हाथ उपयोग में नहीं लाना चाहेंगे ?

1950 के दशक में हावर्ड यूनिवर्सिटी के विख्यात साइंटिस्ट कर्ट रिचटर ने चूहों पर एक अजीबोगरीब शोध किया था। कर्ड ने एक जार को पानी से भर दिया और उसमें एक जीवित चूहे को डाल दिया। पानी से भरे जार में गिरते ही चूहा हड़बड़ाने लगा और जार से बाहर निकलने के लिए लगातार ज़ोर लगाने लगा। चंद मिनट फड़फड़ाने के पश्चात चूहे ने जार से बाहर निकलने का अपना प्रयास छोड़ दिया और वह उस जार में डूबकर मर गया। कर्ट ने फ़िर अपने शोध में थोड़ा सा बदलाव किया। उन्होंने एक दूसरे चूहे को पानी से भरे जार में पुनः डाला। चूहा जार से बाहर आने के लिये ज़ोर लगाने लगा। जिस समय चूहे ने ज़ोर लगाना बन्द कर दिया और वह डूबने को था.....ठीक उसी समय कर्ड ने उस चूहे को मौत के मुंह से बाहर निकाल लिया। कर्ड ने चूहे को उसी क्षण जार से बाहर निकाल लिया जब वह डूबने की कगार पर था। चूहे को बाहर निकाल कर कर्ट ने उसे सहलाया .....कुछ समय तक उसे जार से दूर रखा और फिर एकदम से उसे पुनः जार में फेंक दिया। पानी से भरे जार में दोबारा फेंके गये चूहे ने फिर जार से बाहर निकलने की अपनी जद्दोजेहद शुरू कर दी। लेकिन पानी में पुनः फेंके जाने के पश्चात उस चूहे में कुछ ऐसे बदलाव देखने को मिले जिन्हें देख कर स्वयं कर्ट भी बहुत हैरान रह गये। कर्ट सोच रहे थे कि चूहा बमुश्किल 15 - 20 मिनट तक संघर्ष करेगा और फिर उसकी शारीरिक क्षमता जवाब दे देगी और वह जार में डूब जायेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। चूहा जार में तैरता रहा। अपनी जीवन बचाने के लिये लगातार सँघर्ष करता रहा। 60 घँटे .....जी हाँ .....60 घँटे तक चूहा पानी के जार में अपने जीवन को बचाने के लिये सँघर्ष करता रहा। कर्ट यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये। जो चूहा महज़ 15 मिनट में परिस्थितियों के समक्ष हथियार डाल चुका था .....वही चूहा 60 घंटों तक कठिन परिस्थितियों से जूझ रहा था और हार मानने को तैयार नहीं था। कर्ट ने अपने इस शोध को एक नाम दिया और वह नाम था.....

"The HOPE experiment".....! Hope.....यानि आशा ।

कर्ट ने शोध का निष्कर्ष बताते हुये कहा कि जब चूहे को पहली बार जार में फेंका गया .....तो वह डूबने की कगार पर पहुंच गया .....उसी समय उसे मौत के मुंह से बाहर निकाल लिया गया। उसे नवजीवन प्रदान किया गया। उस समय चूहे के मन मस्तिष्क में "आशा" का संचार हो गया। उसे महसूस हुआ कि एक हाथ है जो विकटतम परिस्थिति से उसे निकाल सकता है। जब पुनः उसे जार में फेंका गया तो चूहा 60 घँटे तक सँघर्ष करता रहा.....

वजह था वह हाथ.....वजह थी वह आशा .....वजह थी वह उम्मीद। .....इसलिए सदैव.....

उम्मीद बनाये रखिये। सँघर्षरत रहिये। सांसे टूटने मत दीजिये । मन को हारने मत दीजिये ।

विगत कई वर्षों से हम राष्ट्रीय उपलब्धि परीक्षण एवं असर के परिणाम के मामले में बहुत फिसड्डी रहे हैं, लेकिन जब सभी राज्य कोरोना से हुए नुकसान की भरपाई में बहुत पीछे था वहीं छत्तीसगढ़ के शिक्षकों ने बच्चों का सीखना विभिन्न नवाचारी तरीकों से जारी रखा, जिसका परिणाम हमें असर 2022 में दिखाई दिया, इस वर्ष हम राष्ट्रीय उपलब्धि परीक्षण और असर सर्वे को ध्यान में रखकर बहुत सोच-समझकर हमारी कक्षाओं में मेहनत करेंगे ताकि और अधिक बेहतर परिणाम हमारे राज्य को मिल सके.

एजेंडा चार: शिक्षक में है दम: कम नहीं हैं हम !

शक्ति मिल्स गैंगरेप से लेकर जर्मनी बेकरी ब्लास्ट, कसाब और दाभोलकर मर्डर केस तक के अपराधियों को अपने स्केच के जरिए जेल की सलाखों तक पहुँचाने वाले नितिन महादेव यादव की कहानी, जिन्हें प्यार से "आधा पुलिसवाला" भी कहा जाता है। कई लोग इन्हें 'यादव साहब' कह कर भी बुलाते है। नितिन मात्र 5वीं कक्षा के छात्र थे जब उन्होंने कागज़ को बीस रुपये के नोट के आकार में काटा और अपने पेंट ब्रश की मदद से हूबहू असली नोट जैसा पेंट कर दिया। उस नोट को लेकर नितिन एक होटल में गये और काउंटर पर वह नोट पकड़ा दिया। नोट इतना हूबहू पेंट हुआ था कि सामने खड़े व्यक्ति ने उसे असली नोट समझ कर रख लिया। जब नितिन ने बताया के वह नोट नकली है तो सभी लोग पाँचवीं कक्षा के इस छात्र की प्रतिभा का लोहा मान गये। एक रोज़ नितिन मुम्बई के ही एक पुलिस स्टेशन में नेमप्लेट पेंट कर रहे थे। थाने में एक मर्डर केस आया, मर्डर का गवाह होटल में काम करने वाला एक वेटर था। पुलिस उससे मर्डर करने वाले व्यक्ति का हुलिया पूछ रही थी और वेटर समझा नही पा रहा था। नितिन थानेदार के पास गये और उनसे कहा कि अगर वह वेटर को केवल आधा घंटा उसके साथ बैठने दें तो वह मर्डर करने वाले व्यक्ति का हूबहू स्केच तैयार कर सकता है। पहले थानेदार ने नितिन की बात को मज़ाक में लिया पर नितिन के बार बार आग्रह पर थानेदार मान गया। उसके बाद जो हुआ वह चमत्कार था। वेटर से मर्डर करने वाले का हुलिया पूछने के बाद नितिन ने थानेदार के हाथ में एक स्केच पकड़ाया। वह चेहरा हूबहू मर्डर करने वाले व्यक्ति से मिलता था। स्केच की मदद से 48 घंटे के अंदर वह आरोपी पकड़ा गया। सारा पोलिस महकमा अब नितिन का मुरीद बन चुका था। कुछ समय के पश्चात एक लड़की से बलात्कार हुआ जो मूक बधिर थी। ना बोल सकती थी, ना सुन सकती थी। नितिन को तत्कालीन डीएसपी ने याद किया और बच्ची से मिलवाया। नितिन बलात्कारी का चेहरा बच्ची की आँखों में देख चुके थे। नितिन ने एक एक कर के कई स्केच बनाये। कई तरह की आँखें, कई तरह का चेहरा। कई तरह के नैन-नक्श। एक एक कर इशारे के ज़रिये बच्ची बताती गयी की बलात्कारी कैसा दिखता है। 8 घँटे की अथक मेहनत के बाद नितिन मनोहर यादव ने डीएसपी के हाथ में बलात्कारी का स्केच थमा दिया। स्केच की मदद से अगले 72 घण्टे में बलात्कारी को पकड़ा गया। नितिन अब मुम्बई पोलिस के लिये संजीवनी बूटी बन चुके थे। हर एक केस में नितिन के स्केच ऐसी जान फूँक देते के पुलिस उसे आसानी से सुलझा लेती। बीते 30 वर्ष के अंतराल में यादव पुलिस के लिये करीबन 4000 से अधिक स्केच बना चुके हैं। उल्लेखनीय है कि केवल यादव की बनायी हुई तस्वीर की बदौलत मुम्बई पुलिस 450 से अधिक खूँखार से खूँखार अपराधी को गिरफ्तार कर चुकी है।

अब वह विषय, जिसके लिये यह पूरा लेख लिखा गया है.... 30 साल में किसी भी स्केच या तस्वीर के लिये नितिन ने पुलिस या किसी भी अन्य व्यक्ति से "एक नया पैसा" भी नहीं लिया है। बार-बार पुलिस महकमे के बड़े से बड़े अफसर ने नितिन को ईनामस्वरूप धनराशि देने का प्रयास किया पर नितिन ने एक रुपया भी लेने से इनकार कर दिया। "नितिन मनोहर यादव" चेम्बूर एजूकेशन सोसाइटी के एक स्कूल में शिक्षक रहे। जो तनख्वाह आती उसी से गुज़र बसर करते रहे। वह कहते हैं कि स्केच बना कर वह एक तरह से राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। असामाजिक तत्वों की पहचान होती है तो वह सलाखों के पीछे जाते हैं। नितिन 30 साल तक अपना काम राष्ट्र सेवा के भाव से करते रहे और आज भी एक बुलावे पर सब कामकाज छोड़ कर हाज़िर हो जाते हैं। 30 साल की इस सेवा में नितिन को करीबन 164 प्रतिष्ठित संस्थाओं ने सम्मानित किया है। नितिन बड़े फक्र से सम्मानपत्र और ट्रॉफी दिखाते हुये कहते हैं.... "यही मेरी कमाई है। यही मेरी जमापूँजी है!" कभी कभी लगता है के यह राष्ट्र कैसे चल रहा है। चहुँओर बेईमानी का दबदबा है। चहुँओर भ्रष्ट आचरण का बोलबाला है। फिर किसी दिन नितिन महादेव यादव जैसे किसी समर्पित व्यक्ति के विषय में पढ़ कर ऐसा लगता है कि राष्ट्र के प्रति समर्पित यादव जैसा एक व्यक्ति भी हज़ारों #बेईमानों पर भारी है ।

क्या हम शिक्षकों के बीच भी ऐसे टेलेंटेड शिक्षक हैं जो अपने टेलेंट का उपयोग लोकहित एवं देशसेवा में करते हैं ? क्या हम भी अपने शिक्षकीय कौशल के साथ-साथ अन्य किसी क्षेत्र में कोई विशिष्ट कौशल विकसित कर उसका उपयोग राष्ट्रहित, लोकहित में कर सकते हैं ? इस नए सत्र में इस बारे में भी सोचकर कुछ निर्णय लेकर उसे फलीभूत करें !

एजेंडा पांच: स्कूल खुलने से पहले शाला प्रबन्धन समिति की बैठक हेतु एजेंडा

सभी शालाओं में गठित शाला प्रबन्धन समिति की एक बैठक आयोजित करने हेतु कुछ एजेंडे इस प्रकार से तय किए जा सकते हैं-

1. आगामी सत्र के लिए शाला प्रबन्धन समिति का गठन (यदि ढाई वर्ष का कार्यकाल पूर्ण हो गया हो)
2. शाला प्रबन्धन समिति की जवाबदेहियों से परिचय (विशेषकर गुणवत्ता-परक शिक्षा संबंधी)
3. शाला की आवश्यकताओं का आकलन एवं संसाधन सुविधा सुलभ करवाए जाने हेतु सामुदायिक सहयोग
4. शाला का वातावरण सुन्दर एवं आकर्षक बनाना एवं परिसर में प्रिंट-रिच वातावरण बनाना
5. शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के आयोजन हेतु तैयारियां एवं अपने क्षेत्र को शून्य ड्राप-आउट क्षेत्र अथवा शत-प्रतिशत उपस्थिति वाला क्षेत्र घोषित किए जाने हेतु पालक संपर्क अभियान
6. सभी इन्सेंटिव/ प्रोत्साहन सामग्री को समय पर वितरित किए जाने एवं उनके उपयोग हेतु नीति

एजेंडा छह: समर कैंप का प्रभाव और स्कूल खुलने से पहले के कुछ दिन.....

समग्र शिक्षा द्वारा परिचालित **चर्चा पत्र** में बच्चों को सीखने में सहयोग हेतु कुछ नवाचार, शिक्षण/पाठ योजना के नमूने एवं शिक्षक साथियों के द्वारा किए गए कुछ अभिनव प्रयास साझा किया जाता रहा है। इस संदर्भ में माह अप्रैल के चर्चा पत्र में ग्रीष्मावकाश के दौरान **छलांग कार्यक्रम** के तहत शासकीय शालाओं में ग्रीष्मकालीन **सीखना-सिखाना शिविर** आयोजित करने का सुझाव दिया गया था। चर्चा पत्र के इस सुझाव पर अमल करते हुए बहुत सारे शिक्षक साथियों ने अपने-अपने शालाओं में इसका सफल आयोजन किया। इसका परिणाम उत्साह बढ़ाने वाला रहा जो कई मायने में न केवल हमारे शैक्षिक प्रयासों को नया आयाम देगा बल्कि बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को मजबूत आधार देगा।

इस वर्ष छतीसगढ़ के कई स्कूलों में परीक्षा के बाद से 10 से 12 दिवसीय समर कैंप का आयोजन किया गया। इस समर कैंप का काफी सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहा है. अब तक के आयोजित सभी 10 से 12 दिवसीय समर कैंप में यह देखा गया कि

- परीक्षा के बाद जहाँ बच्चों की संख्याओं में गिरावट दिख रही थी वहीं उसमें वृद्धि दिखने लगी
- जहाँ बच्चे 20 से 25 आते थे वहाँ अब बच्चे 70 से 90 आने लगे. कई जगहों पर तो 100% और उससे भी बढ़ कर आसपास के गैरशासकीय स्कूलों से भी बच्चे आने लगे
- इस समर कैंप के दौरान पालकों की तरफ से भी आश्चर्यचकित करने वाला समर्थन रहा. लगभग उन सभी जगहों पर जहाँ भी समर कैंप का आयोजन किया गया वहाँ 20 से ज्यादा पालकों की उपस्थिती रही.
- इसके साथ ही गाँवों के सरपंच और अन्य जन का सहयोग भी अच्छा रहा
- समर कैंप की मुनादी करवाना हो या फिर समर कैंप में आकर बच्चों को उत्साहित करना, सभी में इन सदस्यों का भी अच्छा सहयोग रहा.
- बच्चों के सीखने के स्तर में भी सकारात्मक परिणाम दिखा. समर कैंप में भाग लेने वाले प्रत्येक बच्चों का लेखा-जोखा स्कूलों के पास है. जिसके माध्यम से यह देखा जा सकता है कि बच्चों ने बारह दिनों में क्या और कितना सीखा?

तो हम यह देख पा रहे हैं कि कैसे जहाँ परीक्षा के बाद स्कूल का माहौल उदासीन हो गया था वहाँ समर कैंप की वजह से खुशहाली और सीखने-सीखने योग्य माहौल का निर्माण हुआ। इसी प्रकार स्कूल खुलने के बाद भी स्थिति कुछ ऐसी ही रहती है। शुरुआती कुछ दिन नव प्रवेश और गणवेश की तैयारियों में ही समय चला जाता है। जिससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कुछ दिनों तक बाधित रहती है। इसके साथ ही बहुत से बच्चे जिनके लिए स्कूल का माहौल नया रहता है उनके लिए भी कुछ ऐसे माहौल का निर्माण नहीं हो पाता, जो उन बच्चों को पहले स्कूली वातावरण में सहज करे और

फिर स्कूल के प्रति उनमें एक नई ऊर्जा का संचार करे. इसे देखते हुए समर कैंप की तरह ही स्कूल के खुलने से कुछ दिनों पहले से ही शुरुआती कुछ दिनों तक शाला प्रवेशोत्सव मनाने की शुरुआत की जा सकती है. इसके लिए हम निम्न गतिविधियों का सहारा ले सकते हैं-

- प्रति दिन प्रार्थना के समय पूरे हाव-भाव के साथ एक बालगीत शिक्षकों द्वारा और दो बालगीत बच्चों द्वारा करवाया जाए, जिससे वे स्कूली वातावरण में सहज हो सके.
- बच्चों में स्कूल के प्रति अपनापन जागृत करने के लिए कागज के आई कार्ड बनवाए जा सकते हैं जिसमें वे अपने स्कूल का नाम, अपना नाम, उम्र, वजन और लंबाई को दर्ज करें.
- रचनात्मक गतिविधि के रूप में बहुत छोटे बच्चों को शाला का चित्र बनाने को दिया जा सकता है, बड़े बच्चों को शाला के संबंध में कुछ चीजें जो उन्हें पसंद आता है, शाला की विशेषता के बारे में लिखने को कह सकते हैं. शिक्षक चाहे तो पोस्टर और स्लोगन भी बनवा सकते हैं. लेखन कार्य पूर्ण होने पर बच्चों के साथ समुदाय भ्रमण में रैली निकाली जा सकती है और समुदाय को शाला के बारे में बनाए बच्चों के चित्र, पोस्टर, स्लोगन आदि को लेकर पालकों से बात कर सकते हैं.
- स्कूल से समुदाय के लोगों को जोड़ने के लिए समुदाय से कुछ सदस्यों को बुलाकर लोक कहानियां बच्चों को सुनाई जा सकती है.
- सभी बच्चों की छोटी हस्तपुस्तिका का निर्माण करवाया जा सकता है जिसमें वे किसी भी थीम या अपनी मनपसंद की चीजों को लिख और चित्र बना सकते हैं.
- बच्चों के साथ मिलकर कुछ कहानी, कविता और शब्द पोस्टरों का निर्माण कर, उसे स्कूल की दीवारों में लगाया जा सकता है जिससे स्कूल का माहौल प्रिंट समृद्धि बने.
- इन सबके साथ कहानी लेखन, नाटक मंचन आदि को भी शुरुआती कुछ दिनों में जगह दी जा सकती है.
- स्कूल का माहौल थोड़ा मनोरंजक बनाने के लिए कुछ खेलों को भी शामिल किया जा सकता है जिसमें जंप इन-जंप आउट, म्यूजिकल बॉल, श से शेर, पास द बॉल आदि को खिलाया जा सकता है.
- छोटे बच्चों को बड़े कक्षाओं के बच्चों के साथ समूह बनाकर उन्हें अपने आसपास के बच्चों को शाला अवधि से अतिरिक्त समय में सीखने में सहयोग करने की जवाबदेही देवें.
- पिछली कक्षाओं के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को अगली कक्षा में आने से पूर्व हासिल करवाए जाने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं करें.
- शाला परिसर को आकर्षक बनाने समुदाय के साथ मिलकर किचन गार्डन, बागवानी, औषधीय पौधों, नर्सरी, व्यवयसायिक शिक्षा परिसर आदि तैयार किया जा सकता है.
- शाला में उपलब्ध संसाधन एवं समुदाय की इच्छा के आधार पर स्कूल में किसी एक ख़ास खेल को विकसित करने की दिशा में भी पहल की जानी चाहिए, इस हेतु आसपास उपलब्ध विशेषज्ञों की सेवाएं लेते हुए बच्चों को अभ्यास करवाते हुए उन्हें खेलो इंडिया में आगे बढवाए.

इस वर्ष अब तक जिन शालाओं ने छलांग कार्यक्रम लागू नहीं किया है, स्कूल खुलने से उसे लागू करवा लेवें.

एजेंडा सात: अनुभव-आधारित सीखना

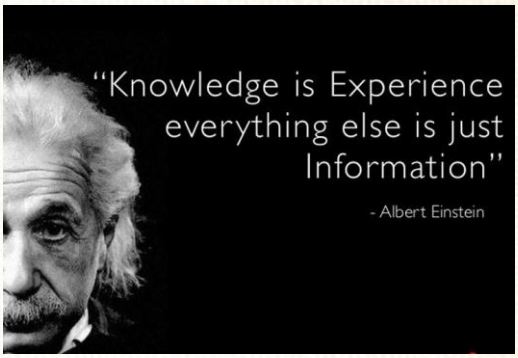

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों को अनुभव-आधारित शिक्षण व्यवस्था सुलभ करवाए जाने की बात कही गयी है. आइन्स्टीन के कथन पर विचार करें तो ज्ञान अनुभव से आता है बाकी सब सूचनाएं मात्र हैं. आप आपस में चर्चा करें कि आप बच्चों को अपनी कक्षाओं में सूचना मात्र दे रहे हैं या अनुभव के रूप में उन्हें जीवन का ज्ञान या सार भी मिल रहा है. हमें यह देखना होगा कि वो कौन कौन से अवसर हैं जहां पर हम बच्चों को सीखने के लिए उन्हें स्वयं अनुभव कर सीखने के अवसर दे सकते हैं. ऐसे अवसरों की पहचान कर हम सबको अपने अपने विषय के लिए एक गतिविधि बैंक का संग्रह कर लेना चाहिए. ऐसे गतिविधि बैंक को तैयार कर सभी शिक्षकों के साथ साझा किया जा सकता है, क्या आप सभी इस नेक कार्य के लिए तैयार हैं ? तो अभी से सोचना शुरू करें और अपने नवाचारी विचारों को अपने डायरी में संकलित करना प्रारंभ करें. एक सुझावात्मक प्रारूप आपके साथ साझा किया जा रहा है-

क्या सिखाना है	पाठ, विषय एवं कक्षा	बच्चों को सीखने का अनुभव कैसे देंगे ?
तितली का जीवन चक्र	पाठ--- विषय--- कक्षा ----	बच्चों को तितली के जीवन चक्र से संबंधित विभिन्न चरण का प्रत्यक्ष अनुभव दिलवाएं, इस हेतु .....
पदार्थ के विभिन्न रूप	पाठ--- विषय--- कक्षा ----	पानी को फ्रिज में रखें तो वह ठोस रूप बर्फ में आपको दिखाई देगा, पानी को गर्म करें तो उसका भाप वाला रूप देखने को मिलेगा. एक रूप से दूसरे रूप में कैसे बदलते हैं इसे भी घर पर अवलोकन कर करके देखने का अवसर बच्चों को देवें. कक्षा में चर्चा के बाद पाठ को समझावें
ध्वनि और प्रकाश में कौन तेज गति से चलता है ?		
अपने आसपास भोजन पिरामिड बनाना		
जूते, चप्पल और टायर में ग्रिप कैसे बनता है ? कैसे आकार में अधिक ग्रिप बनेगा ?		

आपस में बैठकर अपने विषयवस्तु के उन प्रकरणों को ढूंढें जिसे आप अनुभव-आधारित शिक्षण प्रक्रिया का उपयोग कर कक्षा में बच्चों को सीखने हेतु अवसर दे सकते हैं.

एजेंडा आठ: शाला संकुल विकास योजना (School Complex Development Plan)

शिक्षा के अधिकार क़ानून 2009 के अनुसार सभी शालाओं में आगामी तीन वर्षों की कार्यशील शाला विकास योजना होनी चाहिए जिसके आधार पर शालाओं को अपने विकास की दिशा में काम करते हुए आगे बढना चाहिए. अब हम राज्य में शाला संकुल योजना को धरातल में लागू कर चुके हैं. राज्य में कुल 5540 शाला संकुल कार्यशील हैं जिनके माध्यम से उनके अधीनस्थ स्कूलों में गुणवत्ता शिक्षा सुविधा उपलब्ध करवाते हुए विभिन्न योजनाओं की सतत निरीक्षण का काम भी किया जाना चाहिए.

इस सत्र में सभी शाला संकुलों को अपने संकुल की सभी शालाओं में FLN के मूलभूत लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में पूरे जोश के साथ शुरुआत से ही काम शुरू कर देना चाहिए.

TASK One: इस हेतु सबसे पहले एक समिति का गठन करें जिसे शाला संकुल प्रबन्धन समिति (School Complex Development Committee- SCDC) के नाम से जाना जाएगा. इस समिति में शाला संकुल के भीतर के सभी शालाओं से सक्रिय प्रतिनिधियों को चुनकर रखा जाए जो कि शाला संकुल प्राचार्य के नेतृत्व में मिलकर काम करें

TASK Two: शाला संकुल प्रबन्धन समिति की एक बैठक लेकर उन्हें उनकी भूमिका से अवगत करवाया जाए. गठन के प्रथम वर्ष अर्थात इस आने वाले सत्र में शाला संकुल के भीतर की सभी शालाओं में FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में मिलकर कार्य किया जाएगा

TASK Three: शाला संकुल प्राचार्य अपने शाला संकुल में पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, हाई स्कूल, हायर सेकन्डरी स्कूल, निजी एवं अनुदान प्राप्त विद्यालयों में भी गुणवत्ता सुधार की दिशा में उनकी बैठक लेकर निर्देशित कर सकेंगे, सभी स्कूलों में मुख्यतः राष्ट्रीय उपलब्धि परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन हेतु विद्यार्थियों को नियमित रूप से तैयार करना होगा.

TASK Four: शाला संकुल के सभी शालाओं में प्रत्येक बसाहट में बच्चों का विवरण इस प्रकार से एकत्रित किया जाए ताकि 6 से 18 आयु वर्ग का प्रत्येक बच्चा हमारे स्कूली सिस्टम में हो. प्रत्येक शाला से बाहर या अप्रवेशी बच्चे की पहचान कर उन्हें उनके आयु-अनुरूप कक्षाओं में प्रवेश दिलवाते हुए उन्हें उनकी कक्षा के लायक बनाए जाने हेतु सेतु पाठ्यक्रम का संचालन करते हुए जीवनोपयोगी मुद्दों को ऐसे बच्चों के साथ कम समय में सिखाया जाए

TASK Five: शाला संकुल के सभी शालाओं में प्रत्येक बसाहट में पालकों के साथ बैठक लेकर उन्हें अपने बच्चों को नियमित शाला भेजने, घर पर रहते समय कुछ समय पढाई में ध्यान देने, गृहकार्यों को पूरा करके लाने एवं अभ्यास पुस्तिकाओं पर नियमित रूप से अभ्यास करने एवं कृत कार्यों पर फीडबैक लेकर सुधार हेतु बच्चों को प्रेरित करें. यह ध्यान रखें कि सभी बच्चे प्रतिदिन नहा-धोकर समय पर साफ़-सुथरे कपड़ों में स्कूल समय पर आना चाहिए और स्कूल में आयोजित प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय रूप से भागीदार होना चाहिए

TASK Six: शाला संकुल प्राचार्य अपने शाला संकुल के सभी शालाओं में कार्यरत शिक्षकों को किसी न किसी विषय आधारित सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी में शामिल कर विभिन्न

विषयों के अध्यापन को सरल और सुगम बनाने की दिशा में नवाचारी प्रयासों को प्रोत्साहित करें. शिक्षकों को एक दूसरे से निरंतर सीखने की संस्कृति को कक्षा में बच्चों के साथ भी लाया जाए और उन्हें भी एक दूसरे से सीखने हेतु पियर लर्निंग का सहारा लिया जाए

TASK Seven: अपने शाला संकुल के भीतर के सभी शालाओं में अध्ययनरत बच्चों में FLN की स्थिति का आकलन करें, यह पता करें कि कौन से स्कूल ऐसे हैं जहां स्थिति बहुत अच्छी है और किन स्कूलों के साथ बहुत सारे काम करने की आवश्यकता है. आपके संकुल में बच्चों के पढने की स्पीड क्या होनी चाहिए और समझ के साथ स्पीड को बढाने, गणित के सवाल सही तरीके से कम समय में हल करने के कौशल को प्रत्येक बच्चे में विकसित करवाना होगा. एक शाला संकुल प्राचार्य की हैसियत से आपको इस वर्ष सभी शालाओं में उनके अधीनस्थ क्षेत्र में निवासरत सभी बच्चों, चाहे वे स्कूल जा रहे हों अथवा नहीं जा रहे हों, सबमे FLN संबंधी मूलभूत दक्षताओं को समय पर हासिल करवाना आपका लक्ष्य होना चाहिए और इसे प्राप्त करने हेतु पूरी कडाई बरतनी चाहिए

TASK Eight: राज्य में इस सत्र में सभी कक्षाओं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लेखित सभी नवाचारी शिक्षण तकनीकों एवं अभ्यासों (Innovative Pedagogical practices) को लागू करने पर फोकस किया जाना है. खिलौनों से सीखना, खेल-खेल में सीखना, एक दूसरे से सीखना, पियर लर्निंग एवं पियर आकलन, अनुभव-आधारित सीखना जैसे विभिन्न अभ्यासों को हमें प्रत्येक शिक्षक के कक्षा शिक्षण के दौरान अपनाए जाने हेतु प्रेरित करना होगा. एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते समय अक्सर बहुत सारी चीजे सीखे बिना आगे बढ़ जाते हैं. ऐसे में यदि हमारी कक्षाओं की जिम्मेदारी प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों को ऐसे डी जाए कि कक्षा पहली एक शिक्षक तो कक्षा दूसरी दूसरा शिक्षक, फिर कक्षा तीसरी पहला शिक्षक तो कक्षा चौथी दूसरा शिक्षक अर्थात एक एक कक्षा छोड़कर उसकी जिम्मेदारी एक एक शिक्षक को दे दी जाए और यह निर्देशित किया जाए कि उस कक्षा के सभी बच्चों को सभी निर्धारित लर्निंग आउटकम को अच्छे से सिखाने पर ही उसे अगली कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा और इसका वे आपस में एक दूसरे के साथ कड़ाई के साथ पालन करे, तो हम प्रत्येक कक्षा में प्रत्येक बच्चे में अपेक्षित दक्षता हासिल करवाने में सक्षम हो सकेंगे. किसी कक्षा में बच्चों को रोकना नहीं है पर आगे भी तब तक नहीं बढ़ने देना है जब तक संबंधित शिक्षक उनमें समस्त दक्षताएं हासिल नहीं करवा लेता और इसके लिए अगली कक्षा में प्रवेश देने वाला पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होता.

TASK Nine: शालाओं में बच्चों का सीखना जारी रखे जाने हेतु समुदाय को भी सीखने में सहयोगी बनाकर (Community Involvement & Partnerships) काम करना होगा. शाला प्रबंधन समिति के प्रशिक्षण के दौरान उन्हें उनके कर्तव्यों की जानकारी देते हुए सभी बच्चों एवं शिक्षकों को समय पर स्कूल आने, निर्धारित समय में पाठ्यक्रम को पूरे समझ के साथ पूरा करने एवं पीछे छूट रहे बच्चों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करनी होगी.

TASK Ten: बच्चों को कक्षा में बेहतर तरीके से सीख पाने हेतु विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री एवं आकलन के सरल प्रक्रियाओं (Material Development and assessment mechanism) को अपने संकुल के समस्त शालाओं में लागू करने की दिशा में आपको काम करना होगा. सीखने का आकलन के बदले सीखने के लिए आकलन को लागू करना होगा,

एजेंडा नौ: सभी स्कूलों को ग्रीन स्कूल में बदलना

सतत विकास के लक्ष्यों (Sustainable Development Goals-SDG) को प्राप्त करने हेतु हमें अपने स्कूलों को ग्रीन स्कूलों के रूप में विकसित करना होगा. किसी स्कूल को ग्रीन स्कूल के रूप में विकसित करने हेतु आपको निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना होगा-

- शालाओं में इको क्लब का गठन कर उनके माध्यम से जन-जागरूकता लाई जाए
- कैम्पस में बच्चों एवं शिक्षकों को सायकल अथवा पैदल आने हेतु प्रोत्साहित करें
- शाला में कूड़ेदान की व्यवस्था हो जिसमें गीला-सूखा कचरा अलग-अलग रखा जा सके
- शाला परिसर में वर्षा ऋतू के जल संग्रहण हेतु रेन वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था हो
- आसपास हरे-भरे वृक्ष, पेड़-पौधे लगे हों जिसकी देखभाल की जिम्मेदारी बच्चों की हो
- विभिन्न दैनिक जीवन की सामग्री को रिसायकल कर उपयोग हेतु जागरूक करें
- पानी का बेहतर एवं किफायत से उपयोग हो और हाथ धोने या अन्य उपयोग में लाए गए पानी का बागवानी या अन्य कार्यों में उपयोग हो
- क्षेत्र में खुले में शौच मना हो और स्कूल में शौचालय स्वच्छ एवं उपयोग हेतु सुलभ हो
- आसपास वायु-प्रदूषण बिलकुल भी न हो और इसके प्रति जागरूकता विकसित हो
- शाला की दीवारों पर पेंट गोबर से किया गया हो और परिसर में पर्यावरण जागरूकता हो
- शाला में बच्चों की सुरक्षा के समस्त पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा
- बच्चों के बैठने हेतु हवादार, रोशनी युक्त, सुरक्षित दूरी का पालन करते हुए बैठक व्यवस्था

एजेंडा दस: स्कूलों में इस अंक का फोलो-अप

नए सत्र के इस पहले अंक को सभी शिक्षकों से पढवाते हुए अपनी अपनी शालाओं में निम्नलिखित कार्यों को संपन्न करवाए जाने की अपेक्षा है-

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप कक्षा शिक्षण में बदलाव् लाने हेतु तैयारी करें
2. शाला से बाहर के बच्चों की ट्रेकिंग कर सभी बच्चों को प्रवेश दिलवाएं
3. बच्चों में पठन कौशल एवं समझ के साथ पढने के कौशल में निरंतर सुधार लाएं
4. राष्ट्रीय उपलब्धि परीक्षण एवं असर सर्वे में बेहतर प्रदर्शन हेतु विशेष ध्यान देवें
5. स्कूलों के खुलने से पहले शाला प्रबन्धन समिति की एक बैठक लेकर निर्णय लेवें
6. सभी शिक्षक इस सत्र में नवीन कौशल को सीखकर उसमें दक्ष होने का प्रयास करें
7. सभी शालाओं में बच्चों के साथ ग्रीष्मावकाश के दौरान विशेष बिन्दुओं पर काम हो
8. अपनी कक्षाओं में अनुभव-आधारित सीखना लागू करने हेतु पाठ योजना बनाएं
9. प्रत्येक शाला संकुल अपने शाला संकुल में गुणवत्ता-परक शिक्षा देने हेतु एक समिति का गठन कर उनके माध्यम से योजना बनाकर उनका क्रियान्वयन करें
10. सभी स्कूलों को वर्षा ऋतु के प्रारंभ से ही ग्रीन स्कूल के रूप में विकसित करें

छत्तीसगढ़ में शाला संकुल व्यवस्था एवं संकुल स्रोत समन्वयक के पद इसलिए दिए गए हैं कि राज्य द्वारा सुझाए गए बिन्दुओं पर सभी शालाओं में बढ़िया काम हो. हम उम्मीद करते हैं इस सत्र में आपके संकुल में उपरोक्त सभी चीजें होती हुई दिखाई देंगी.